☛ रौशन पाठक

कौन जाने ?

कौन जाने ? कब किसकी हस्ती मिटने वाली है ।
किसी की चलती गाड़ी कब रुक जाने वाली है ।
कौन जाने .....

चलते–चलते एक दिन, तेरी दुनियॉ खत्म हो जायेगी ।
कुछ ना रहेगा तेरा यहॉ, बस तेरी राख रहने वाली है ।
कौन जाने .....

ये आरजू से सजे, तेरे ख्वाब सुनहरे, यहीं बिखर जायेंगे ।
नहीं अधिक दिवस, बस कुछ दिन, तेरी यादें रहने वाली है ।
कौन जाने .....

कर ले पूरी हो सके जितनी भी, अंतहीन ये तेरी ख्वाहिशे ।
खत्म ना होंगी कभी तेरी हसरतें, अधूरी रहने वाली है ।
कौन जाने .....

ये राज–पाट सब संगी–साथी, कोई नहीं जाता पीछे ।
लाख करें कोशिश स्वजन, कहॉ मौत रुकने वाली है ।
कौन जाने .....

कर ले दिल खोल के बातें, कहना जरा तोल के बातें ।
कभी–कभी कुछ बातों मे, तेरी यही बातें रहने वाली है ।
कौन जाने .....

पैसों के ढेर पै तूँ बैठा है, जाने किस क्षण ढेर तूँ हो जाये ।
कुछ ना जायेगा साथ तेरे, सब यहीं तो रहने वाली है
कौन जाने .....

धूप मिले तो छॉव को तरसे, छॉव मिले तो कहे धूप भली ।
संतोष में सीख ले जीना वर्णा, जीवन दुखमय जाने वाली है ।
कौन जाने .....

जिंदगी में हैं खूशियॉ भरी, बस दिल खोल के जी ।
मालूम कहॉ है कि, कौन से पल जिंदगी थमने वाली है ।
कौन जाने .....

भूल के तूझको सब, खो जायेंगे अपने–अपने कर्मो में।
रीत यही है दुनियॉ की, तेरे लिये नहीं बदलने वाली है ।
कौन जाने .....

कुछ देकर ऐसी यादें जाना, कि दुनियॉ तुझको याद रखें ।
वर्णा कौन सा तेरे जाने से, दुनियॉ रुकने वाली है ।
कौन जाने .....